ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 256-259

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

दशावतार प्रतिमाओं पर एक विमर्श

डॉ0 जितेन्द्र कुमार यादव

सहायक अध्यापक– गौरी शंकर टण्डन नेहरू स्मारक इण्टर कालेज, गिलौला, श्रावस्ती (उ0प्र0) भारत

Received-07.09.2022, Revised-14.09.2022, Accepted-19.09.2022 E-mail: : chhotelaly01@gmail.com

सारांशः – ***हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्माण्ड में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन के लिए त्रिदेव ही जिम्मेदार है। त्रिदेवों में शामिल ब्रह्म, ब्रह्माण्ड के निर्माता एवं जगत के पिता है। उन्होंने ही सभी जीवों को बनाया है। भगवान विष्णु सृष्टि के कार्यो की स्थिरता और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है। महादेव के रूप में विख्यात भगवान शिव दुनिया की प्रत्येक वस्तु के नाश और निर्माण के नियामक है।***

कुंजीभूत शब्द– हिन्दू धर्म, ब्रह्माण्ड,परिवर्तन, जिम्मेदार, सृष्टि, रखरखाव, विख्यात, नियामक, दशावतार प्रतिमा, अलंकृत।

कुषाणकाल से ही दशावतार प्रतिमा का निर्माण आरम्भ हो गया। सर्वप्रथम इस काल में वराह और कृष्ण जैसे कुछ ही अवतारों के दर्शन होते हैं। बलराम की मूर्तियों का निर्माण शुंगकाल से ही होने लगा था। किन्तु शुंग और कुषाणकालीन मूर्तियों में बलराम का वीर रूप ही प्रदर्शित किया गया है। कुषाणकाल के पश्चात् गुप्तकाल से विष्णु अवतारों का उल्लेख साहित्यिक ग्रन्थों एवं अभिलेखों में प्राप्त होने लगता है। रघुवंश में भी दशावतारों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है। एरण की वराह प्रतिमा में हूण शासक तोरमाण का लेख खुदा हुआ है जिसमें वराह अवतार धारण कर विष्णु के द्वारा पृथ्वी के उद्धार की कथा वर्णित है। गुप्तकाल में विष्णु के दशावतारों में वराह, नरसिंह, वामन, राम बलराम तथा कृष्णावतार आदि की प्रतिमाओं का निर्माण व्यापक स्तर पर किया जाने लगा।

मत्स्यावतार की प्रतिमा दो रूपों में मिलती है– 1. साधारण मत्स्य के रूप में 2. नरमत्स्य के रूप में। नरमत्स्य के रूप में निर्मित प्रतिमाओं में चार हाथ होते हैं। जिसमें पहला वरद, दूसरा अभय मुद्रा में एवं तीसरा शंख और चौथा चक्र से सुशोभित मिलता है। ऊर्ध्वभाग किरीट–मुकुट तथा सभी आभूषणों से अलंकृत होता है। इसका प्राचीनतम प्रमाण सारनाथ एवं मथुरा से प्राप्त होता है। सारनाथ के एक स्तम्भ पर मत्स्यावतार का चित्रण मिलता है। मथुरा के साथ प्राप्त साक्ष्य में नर मत्स्य का चित्रण मिलता है।

ढाका जिले के ब्रजयोगिनी नामक स्थान से भी मत्स्यावतार की प्रतिमा मिली है, जिसका उल्लेख आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के वार्षिक रिपोर्ट में आर०डी० बनर्जी महोदय ने किया। काले पत्थरों से निर्मित यह प्रतिमा वहां के काली मन्दिर की दीवार में स्थापित है। इसी प्रकार की दूसरी प्रतिमा बनर्जी महोदय को मध्य–प्रदेश के सोहागपुर से भी प्राप्त हुई। खजुराहो से दो स्वतंत्र मत्स्य विग्रह प्रतिमाएं प्राप्त हुई है, जिनमें एक बड़ी ही विलक्षण है। इसमें चतुर्भुज विष्णु ध्यान मुद्रा में प्रदर्शित है। वे पद्मासन में है और उनके दो हाथ योग मुद्रा में है। उनके मस्तक पर मुकुट एवं गले में आभूषण सुशोभित हैं। उनके उर्ध्व के दॉये–बॉये हाथों में गदा और चक्र शोभायमान हैं। उनके पद्मासन–स्थित पादों के नीचे एक मत्स्याकृति है। इस प्रकार भगवान विष्णु मत्स्यावतार रूप में प्रदर्शित है।

खजुराहो की एक छोटी रथिका में कमल–पत्र के ऊपर एक साधारण मत्स्य प्रदर्शित है। मत्स्य प्रतिमा के ऊपर चार पुरुष मुख बने हैं जो संभवतः चारो वेदों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार मत्स्यावतार की उस प्रतिमा से वेदोद्धार की कथा कही गयी है। राव महोदय ने गढ़वा नामक स्थान से प्राप्त नर–मत्स्य विग्रह प्रतिमा का उल्लेख किया है। जिसमें प्रतिमा का आधा शरीर मत्स्य का और आधा मनुष्य का है। भट्टाचार्य महोदय ने एक मत्स्य विग्रह एवं एक नर–मत्स्य मिश्रित विग्रह प्रतिमा का उल्लेख किया है। मत्स्य विग्रह का सिर ऊँचे शृंग से सुशोभित है और नरमत्स्य विग्रह प्रतिमा चार भुजाओं से मण्डित है, जिसके सिर पर मुकुट और शरीर पर आभूषण शोभायमान है। एक ऐसी ही प्रतिमा का उल्लेख (जम्मू के रामनगर से प्राप्त) आर०सी० महोदय ने भी किया है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार धरा कूर्म के ऊपर अधिष्ठित है। कूर्म अपनी पीठ पर धरा को साधे हुए है। कहा जाता है कि विष्णु ने कूर्म का रूप धारण कर मन्दराचल को थामा, तब जाकर समुद्र मंथन संभव हुआ। शतपथ ब्राह्मण में कूर्म को जल का स्वामी तथा वरूण का सहायक बताया गया है। सृष्टि–निर्माण के समय प्रजापति ने ही कूर्म का रूप धारण किया। मत्स्यावतार की भांति कूर्मावतार भी सर्वप्रथम प्रजापति ब्रह्मा से सम्बद्ध था, किन्तु बाद में इसका सम्बन्ध विष्णु से स्थापित हो गया। आगे चलकर पुराणों में उसे विष्णु का अवतार स्वीकार कर लिया गया। इस सन्दर्भ में भागवतपुराण में उल्लेख है कि अमृत–प्राप्ति के लिए देवों और दानवों द्वारा समुद्र–मंथन को अंजाम देते समय भगवान विष्णु ने कच्छप रूप में अपनी पीठ पर मन्दराचल को धारण किया था।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

मत्स्यावतार की तरह कूर्मावतार की प्रतिमाओं के भी दो रूप मिलते हैं– 1. कूर्म विग्रह 2. नरकूर्म मिश्रित विग्रह। मिश्रित विग्रह की मूर्ति में चार हाथ होते हैं– दो क्रमशः वरद और अभय मुद्रा में तथा दो शंख और चक्र से युक्त। ऐसी प्रतिमा किरीट–मुकुट तथा सभी आभूषणों से अलंकृत होती है। डी०बी० स्पूनर महोदय ने एक मिट्टी की बनी हुई कूर्म प्रतिमा का उल्लेख किया है, जो उन्हें बसाढ़ से प्राप्त हुई थी। उसके निर्माण–तिथि को स्पष्ट करते हुए उसने उसे गुप्त की बताया। समुद्र–मंथन के दृश्य से अंकित कूर्मावतार की एक प्रतिमा भट्टाचार्य महोदय को गढ़वा से प्राप्त हुई है।

कूर्मावतार की दो स्वतंत्र प्रतिमाएं खजुराहो से प्राप्त हुई हैं। जिसमें प्रथम प्रतिमा में भगवान विष्णु के योगासन मुद्रा का दर्शन होता है। तथा द्वितीय प्रतिमा में पद्म–पत्र के ऊपर अवस्थित साधारण कूर्म को दिखाया गया है। जिसके 'ग्रीवा में इकहरी मैक्तिक माला है। कूर्म पीठ पर एक दण्डाकार मथानी (मन्दराचल) का दृश्य है। इस पर एक सर्प (वासुकि) की नेती लिपटी है, जिसके एक छोर को देवता तथा दूसरे छोर को दैत्य संभाले हैं। सब मिलाकर समुद्र–मंथन का दृश्य है। दोनों के गलों में मौक्टिक मालाएं सुशोभित हैं। सभी के सिर पर मुकुट के संकेत मिलते हैं। सारे पंक्तिबद्ध दिखाई दे रहे हैं। अगले के चरण पद्म–पत्र पर तथा पीछे के कूर्म की आड़ लिए हुए हैं।

प्रतिमा–शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों के अनुसार सृष्टि–उद्धार में संलग्न वराहावतार की मूर्ति वराह–विग्रह अथवा नर–वराह मिश्रित विग्रह रूप में बन सकती है। वराह विग्रह मूर्ति को साधारण 'वराह' और मिश्रित विग्रह मूर्ति को 'नृवराह' की संज्ञा प्रदान की गयी है। नृवराह के अन्य नाम वराह और भूवराह आदि भी है।

वराह प्रतिमा में आकृति का सम्पूर्ण शरीर वराह का होता है। 'शिल्परत्न' में निर्देश है कि इसकी आकृति तीक्ष्ण डाढ़ों, चौड़े स्कन्ध तथा ऊर्ध्व रोमों से युक्त महाकाय सूकर की भांति निर्मित होनी चाहिए। 'अपराजित पृच्छा' में वराह मूर्ति का विस्तृत विवरण मिलता है। यहां वराह के डाढ़ के अग्रभाग में लक्ष्मी के होने का उल्लेख मिलता है। वराह प्रतिमा का विस्तृत विवरण उत्तर एवं दक्षिण भारत के विविध ग्रन्थों में मिलता है।

वराह अवतार की प्रतिमाओं का निर्माण आरम्भ कुषाण काल में हुआ। एन०पी० जोशी ने इस काल की एक प्रतिमा का उल्लेख अपने ग्रन्थ 'मथुरा स्कल्पचर' में किया है। इसके बॉये कंधे पर पृथ्वी विराजमान है। गुप्तकाल में इस प्रकार की मूर्तियाँ तेजी से बननी आरम्भ हो गयी। इस काल की अनुपम और कलामय मूर्तियाँ आकर्षण का केन्द्र थी। निदर्शन के रूप में मध्य प्रदेश के विदिशा के निकट उदयगिरी की विशाल नृवराह मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। इसमें वराह आदिशेष के ऊपर पैर रखकर खड़े हैं। उनके बॉये कन्धे पर पृथ्वी, स्त्री के रूप में आसीन हैं। उसकी कमनीयता दर्शनीय है। उसके पार्श्व एवं पृष्ठ में गंगा, यमुना तथा असुरों का चित्रण किया गया है।

एरण में एक विशाल वराह की प्रतिमा प्राप्त हुई है, जिस पर हूण शासक तोरमाण का लेख उत्कीर्ण है। डॉ०वी०पी० सिंह ने रामगिरी के समीप से प्राप्त तथा पटना संग्रहालय में सुरक्षित सुन्दर वराह प्रतिमा का उल्लेख अपनी पुस्तक 'भारतीय कला को बिहार की देन' में किया है। इस प्रतिमा में वराह के दो हाथ और दो पैर है। मुख वराह का तथा शरीर मनुष्य का है। वराह का दाहिना हाथ दाहिनी जॉघ पर है और उसकी बॉयी तलहथी पर नारी रूप में पृथ्वी है। बादामी में उत्कीर्ण नृवराह प्रतिमा में पृथ्वी बॉए हाथ पर आसीन है। खजुराहो के वराह मन्दिर में उत्कीर्ण वराह अवतार की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है।5 नृवराह की एक प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में सुरक्षित भी है। इस प्रतिमा का मुखमण्डल वराह का तथा शेष शरीर मनुष्य का है। हार, कंगन, मेखला, नूपुर वनमाला आदि उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। वराह का प्रथम हाथ कट्यवलम्बित तथा शेष तीन में गदा, शंख, और चक्र सुशोभित है। शंखधारी तीसरा हाथ मुड़ा है और उसकी कुहनी पर पृथ्वी विराजमान है। इस सन्दर्भ में 7वीं शती की महाबलीपुरम में उत्कीर्ण नृवराह प्रतिमा भी विशेष उल्लेखनीय है।

नृसिंह का स्वतंत्र अस्तित्व प्रतीत होता है। कालान्तर में भले ही इन्हें भगवान विष्णु के साथ सम्बद्ध कर दिया गया हो। भारत ही नहीं वरन् विश्व के अनेक देशों में भी नृसिंह की पूजा होती है। निदर्शन के तौर पर बेबीलोन और असीरिया का जिक्र समीचीन समझता हूँ। वहाँ की मूर्तियों का सम्पूर्ण शरीर सिंह का तथा मुख मनुष्य का होता है। भारत में उसका उल्टा है। यहाँ की मूर्तियों का मुख शेर का तथा शरीर मानव का होता है। भारतीय वराह प्रतिमा में बड़े–बड़े नखों वाला मानव हाथ प्रदर्शित किया जाता है। मिश्र में भी पशु सिर वाले कई देवों का जिक्र मिलता है। एक स्थल पर राजा बलि को नृसिंह का उपासन बताया गया है।

इसी आधार पर कुछ लोग नृसिंह को आर्येतर देवता मानते हैं। कुछ विचारको का अनुमान है कि नरसिंह की उपासना सीथियन प्रभाव के कारण है। अथर्ववेद के 'स्कम्भ' देव के आधार पर नृसिंह का विकास तथा सम्बन्ध भी कल्पित किया जाता है। गुप्तकाल तक आते–आते विष्णु और नृसिंह का एकीकरण हो गया। गुप्तकाल के पश्चात् वैष्णव धर्म का एक पृथक सम्प्रदाय बन गया, जिसे मानने वाले अपने को नारसिंह, कहा करते थे।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार भगवान वामन छोटे एवं मोटे शरीर वाले होने चाहिए। उनका शरीर दूर्वा धास के सदृश श्याम हो और वे कृष्ण अजिनोपवित धारण करते हों। अग्निपुराण में वामन की प्रतिमा छत्र एवं दण्ड लिए दर्शित है। वैखानस आगम के अनुसार वामन ब्रह्मचारी बालक के रूप में प्रदर्शित हों, उनके सिर पर शिखा एवं कमर में मेखला हो। वे कृष्ण अजिनोपवीत धारण करते हों तथा साथ में एक पुस्तक भी लिए हों। 'शिल्परत्न' में उल्लेख है कि उनके हाथों में छत्र और कमण्डलु होने चाहिए। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार त्रिविक्रम का वर्ण जलपूर्ण मेघ के समान हो तथा उनके हाथों में दण्ड, पाश, शंख, चक्र, गदा और पद्म हो, जिसका प्रदर्शन आयुध–पुरुषों के रूप में न होकर प्राकृतिक हो। उनके विस्फारित नेत्र उर्ध्वमुख हों। शिल्परत्न के अनुसार त्रिविक्रम–मूर्ति का बॉया पैर पृथ्वी पर स्थित हो और दक्षिण सम्पूर्ण नम–स्थल को नापने के लिए उद्धत हो। वैखानस–आगम में उल्लेख मिलता है कि मूर्ति चतुर्भुजी अथवा अष्टभुजी होनी चाएिह। यदि मूर्ति चतुर्भुजी हो तो उसके दो हाथों में शंख और चक्र होने चाहिए तथा दाहिना एक अभय या वरद मुद्रा में और बॉया एक ऊपर की ओर फैला होना चाहिए। यदि मूर्ति अष्टभुजी हो तो पाँच हाथों में शंख, चक्र, गदा, शार्ङ और हल होने चाहिए तथा शेष तीन हाथ पूर्ववत् होने चाहिए।

परशुराम अवतार के सन्दर्भ में लक्षण ग्रन्थ बहुत अधिक विभेदता के पृष्ठ नहीं खोलते। प्रतिमा–विज्ञान के ग्रन्थों में उनके दो हाथों का विधान है। उनके दॉये हाथ में परशु होना चाहिए। वस्त्रों के विषय में बात करें तो उनका वस्त्र सफेद और लाल होना चाहिए। मस्तक पर मुकुट और शरीर पर मृग–चर्म होना चाहिए। अग्निपुराण का विवरण है कि चतुर्भुजी परशुराम प्रतिमा के हाथों में खड्ग, परशु, धनुष एवं बाणों का प्रदर्शन होना चाहिए। रूपमण्डन में भी परशुराम के जटा, अजिन और परशु का वर्णन मिलता है। वैखानस आगम परशुराम को द्विभुजी बनाने का निर्देश दिया गया है, उसके अनुसार दॉये हाथ में परशु एवं बॉया सूची हस्त मुद्रा में होना चाहिए। उनका वर्ण लाल तथा वस्त्र सफेद हों। वे जटामुकुट, यज्ञोपवीत एवं सभी आभूषणों से मण्डित हों।

अत्याचारी रावण का संहार करने के लिए भगवान विष्णु ने राम रूप में अवतार लिया। वाल्मीकि रामायण, राम की गौरव गाथा से मण्डित है। इस महाकाव्य में राम के सम्पूर्ण जीवन का क्रमिक विवेचन है। प्राचीन काल से ही राम को महान लोकनायक का विरद प्राप्त है। जातक कथाओं में रामकथा कुछ विकार ग्रस्त सी हो गयी है। रामायण में राम के स्वरूप का विस्तार दो रूपों नर रूप एवं नारायण रूप में हुआ है। आर०जी० भण्डारकर के अनुसार ईसा से पूर्व ही राम को ईश्वर के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। गुप्तकाल के पूर्व से ही उनकी संकल्पना विष्णु के अवतार के रूप में कर ली गयी थी। उनकी कथाओं के वर्णन में पुराण भी मौन नहीं है।

प्रतिमा शास्त्र के अनुसार उनके स्वभाव के अनुरूप उनकी प्रतिमा भी सरल थी। वाराहमिहिर ने वृहत्संहिता में मात्र इतना ही बतलाया है कि राम की प्रतिमा 120 अंगुल लम्बी निर्मित होनी चाहिए। अग्निपुराण राम को द्विभुज अथवा चतुर्भुज दोनों रूपों में प्रदर्शित करने का निर्देश देता है। राम के हाथों में धनुष, वाण, खड्ग और शंख होना चाहिए। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार भी राम को द्विभुज और चतुर्भुज दोनों रूपों में दिखाया जा सकता है। यदि चतुर्भुज रूप प्रदर्शित हो तो उसमें ध नुष बाण, खड्ग एवं शंख होने चाहिए। राम के मस्तक पर मुकुट सुशोभित हो। उनके साथ लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुहन को भी दिखाना चाहिए। वैखानस आगम राम की द्विभुजी प्रतिमा की ही वकालत करता है। इसके अनुसार राम आभूषणों से अलंकृत हो, उनके मस्तक पर मुकुट हो तथा हाथ में धनुष–बाण हो। उनके बॉये नीलोत्पल ग्रहण की हुई सीता हो तथा साथ में लक्ष्मण एवं हनुमान भी शोमायमान हों।

कुषाण काल से ही कृष्ण–कथा का अंकन आरम्भ हो गया था। मथुरा संग्रहालय में दूसरी–तीसरी शताब्दी कृष्ण जन्माष्टमी का एक खण्डित चित्र सुरक्षित है। मथुरा संग्रहालय में ही एक पट्ट पर वासुदेव द्वारा कृष्ण को सिर पर रखकर, यमुना पार करते हुए दिखाया गया है। दूसरे परिदृश्य में अश्वरूपधारी केशी राक्षस को लात मारते हुए दिखाया गया है। कालियमर्दन करते हुए कृष्ण की दो मूर्तियाँ मथुरा एवं लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित हैं। गुप्तकालीन देवगढ़ के दशावतार मन्दिर6 में भी कृष्णलीलाओं का चित्रण मिलता है। राजस्थान के भण्डोर से प्राप्त द्वार स्तम्भों पर कृष्ण की विभिन्न लीलाएं उत्कीर्ण है, जिन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है– 1. गोवर्धनधारी कृष्ण 2. माखनचोर कृष्ण 3. पैरों से गाड़ी पलटते हुए कृष्ण 4. नाग–नाथते हुए कृष्ण, इत्यादि। मध्यकाल में कृष्ण लीलाओं का प्रचलन अधिक था। बादामी, पहाड़पुर एवं त्रिपुरी के मन्दिरों में कृष्ण लीलाओं का अंकन मिलता है। खजुराहो में कृष्णजन्म, पूतना वध, शकटभंग, तृणावर्त वध, यमलार्जुन उद्धार, वत्सासुर–वध आदि की अत्यन्त सुन्दर मूर्तियाँ अंकित हैं।

पुराणों में बलराम को कृष्ण का बड़ा भाई बताया गया है। धार्मिक साहित्य बलराम के अनेक पर्यायों से मण्डित है, जिनमें संकर्षण मुख्य है। संकर्षण और उनके अनुयायियों का स्पष्ट उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है। बलराम की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

सबसे प्राचीनतम मूर्ति मथुरा से मिली है, जिसे शुंगकाल का बताया जाता है। इसमें बलराम हल–मूसल के साथ प्रदर्शित है। उनके सिर के ऊपर सर्प का फण क्षत्र की भांति सुशोभित है।

प्रतिमा–शास्त्र के अनेक ग्रन्थों में उनके विभव रूप का वर्णन मिलता है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार बलराम हल तथा मूसल के साथ प्रदर्शित हों। उनके नेत्रों में मादकता हो। उनकी चतुर्भुजी मूर्ति का वर्णन अग्निपुराण में मिलता है। इस रूप में उन्हें हल–मूसल, गदा एवं पद्म धारण करना चाहिए। वृहत्संहिता में वर्णन मिलता है कि देव को हल धारण किए हुए होना चाहिए। इसके साथ ही उनकी आँखें मदो–मत्त होनी चाहिए। प्रतिमा–विज्ञान उन्हें चतुर्भुजी होने का संकेत करता है और उसमें हल मूसल के साथ चित्रित करने का निर्देश है।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध शाक्य–वंश में उत्पन्न हुए। पौराणिक दृष्टि से इन्हें विष्णु का का अवतार माना गया है। इनके सन्दर्भ में पुराणों में दो कथाएं कही गयी हैं– प्रथम कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने दुष्टों और असुरों को विनाशी शिक्षा देकर माया जाल में फंसाने के उद्देश्य से यह अवतार लिया कि उनका अन्त हो जाय। दूसरी कथा के अनुसार अच्छे कर्मो एवं वैराग्य भाव का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए यह अवतार लिया ताकि मानवता का प्रसार हो। भागवतों के अनुसार यह विष्णु का माया–मोह अवतार है। वृहत्संहिता में भगवान बुद्ध का वर्णन इस प्रकार मिलता है– "बुद्ध की हथेलियाँ एक पद–तल कमल से चिहिन्त हो, वे शान्त मुद्रा में हो तथा बाल छोटे एवं सुसज्जित हो, वे सम्पूर्ण विश्व के पिता की भांति कमलासन पर बैठे हों। विष्णुपुराण में उन्हें 'दिगम्बरी मुण्ड़ो वर्हिपिच्छ धरः' कहा गया है। विष्णु–धर्मोत्तरपुराण के अनुसार बुद्ध को कषाय वस्त्रधारी पद्मासनस्थ एवं द्विभुजी होना चाहिए। उन्हें ध्यानयुक्त, वरद तथा अभयमुद्रा में चित्रित करना चाहिए। रूपमण्डन बुद्ध को पद्मासन लगाकर आभूषण रहित होकर ध्यानमग्न मुद्रा में बैठने का संकेत करता है।

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में कल्कि अवतार को दसवां अवतार माना गया है। अवतार कथाओं में सर्वसम्मति से इसे भविष्य का अवतार बताया गया है। इसके सन्दर्भ में कल्पना की गयी है कि वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए तथा म्लेच्छों के विनाश के लिए भगवान विष्णु कल्कि–रूप में अवतार लेगें। हयशीर्ष, पंचरात्र एवं अग्निपुराण के अनुसार भगवान कल्कि द्विभुज या चतुर्भुज होंगे। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि भगवान कल्कि महान योद्धा की भांति खड़ग–बाज एवं सफल अश्वारोही होंगे। रूपमण्डन में भगवान कल्कि को हाथ में खड्ग लिए हुए प्रदर्शित किया गया है। इसमें यह भी तथ्य मिलता है कि दुष्टों के विनाश के लिए क्रोध के क्षण में अश्व की सवारी करेंगे। वैखानस आगम उनकी चर्चा चतुर्भुजी देव के रूप में करता है। उसकी स्वीकृति है कि उनका मुख अश्व के समान एवं शरीर मनुष्य के समान होगा। उनके हाथों में शंख, चक्र, खड्ग तथा खेटक सुशोभित होंगे। उनका आकार भयानक होगा।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति के निर्माण में धर्म अग्रणी रहा है। धर्म का विकास भी दशावतारों में दिखाई देता है। हिन्दू धर्म में दशावतारों के प्रतिमाओं का विशेष महत्व है। कुषाण काल से प्रारम्भ दशावतारों की प्रतिमा का निर्माण वर्तमान में भारत ही नहीं बल्कि संसार कई अन्य देशों में बड़े ही कलात्मक दृष्टि से निर्मित हो रहा है। दशावतार की प्रतिमा में आज हमारी आस्था और विश्वास दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। वृदांवन में स्थित कृष्ण की प्रतिमा दशावतारों में सबसे कलात्मक और उल्लेखनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जोशी, एन०पी०–मथुरा स्कल्पचर संदीप प्रकाशन इन्दौर म०प्र० 2004 फिगर–101.
2. अवस्थी, रामाश्रय–खजुराहो की देव प्रतिमाएं, चित्र संख्या–02 पृ०–93.
3. अवस्थी, रामाश्रय–खजुराहो की देव प्रतिमाएं, चित्र संख्या–03 पृ०–94.
4. राव, टी०ए०जी०–एलिमेन्ट्स ऑफ हिन्दू इकोनोग्राफी I & II एपेन्डिक्स पेज–30.
5. अवस्थी, रामाश्रय–खजुराहो की देव प्रतिमाएं चित्र–29, पृ०–97.
6. वत्स, एम०एस०–मेम्योर ऑफ द आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, Pl.XVIII, b, No.70.
7. वृहत्संहिता–58/36–39.
8. वृहत्संहिता–56/36.
9. विष्णुधर्मोत्तरपुराण–85/71.
10. वैखानसागमकोश–राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति, 199 पृ०–53.

*****